Shodh Prabha: A Multidisciplinary Journal
ISSN: 3108-2726 (Online), Volume-2, Issue-3, (May - June) 2026

कौटिल्य की मण्डल नीति और आधुनिक भू-राजनीति: दक्षिण एशिया के विशेष संदर्भ में

संतोष कुमार गौतम [1], प्रो० (डॉ०) विजय प्रताप मल्ल [2]

[1] शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, जवाहर लाल नेहरू मेमोरियल पी०जी० कॉलेज, बाराबंकी

[2] शोध निर्देशक, राजनीति विज्ञान विभाग, जवाहर लाल नेहरू मेमोरियल पी०जी० कॉलेज, बाराबंकी

सारांश

प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन में आचार्य कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' यथार्थवादी कूटनीति और राज्यशिल्प का एक आधारभूत ग्रंथ है। 21वीं सदी की जटिल और बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में, विशेषकर दक्षिण एशियाई भू-राजनीति के संदर्भ में, कौटिल्य के राजनीतिक सिद्धांतों की प्रासंगिकता पर नए सिरे से विमर्श प्रारंभ हुआ है। यह शोध पत्र कौटिल्य की 'मण्डल नीति' (राज्यों के वृत्त का सिद्धांत) का आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक अध्ययन करता है तथा इसे आधुनिक दक्षिण एशियाई सामरिक गतिशीलता के परिप्रेक्ष्य में परखता है। मण्डल सिद्धांत यह प्रतिपादित करता है कि एक विजिगीषु (विजय की इच्छा रखने वाले) राज्य का निकटतम पड़ोसी स्वाभाविक रूप से उसका शत्रु होता है, और शत्रु का शत्रु स्वाभाविक मित्र होता है। यह शोध पत्र इस शास्त्रीय सिद्धांत को भारत, पाकिस्तान और चीन के बीच मौजूद सामरिक त्रिकोण, सीमा विवादों, और क्षेत्रीय गठबंधन की राजनीति पर लागू करता है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि यद्यपि परमाणु निवारण और गैर-राज्य अभिकर्ताओं के उदय ने आधुनिक कूटनीति की प्रकृति को बदल दिया है, फिर भी भौगोलिक नियतिवाद, शक्ति-संतुलन और 'पड़ोसी ही शत्रु' जैसी मण्डल नीति की मूल मान्यताएँ आज भी दक्षिण एशिया की विदेश नीतियों का अदृश्य संचालन कर रही हैं। ऐतिहासिक निरंतरता और आधुनिक भू-राजनीतिक यथार्थवाद के बीच सेतु का निर्माण करते हुए, यह शोध पत्र स्पष्ट करता है कि भारत की 'नेबरहुड फर्स्ट' और 'एक्ट ईस्ट' नीतियां कहीं न कहीं कौटिल्य के षड्गुण्य (छह सूत्रीय विदेश नीति) और मण्डल सिद्धांत का ही आधुनिक और परिष्कृत संस्करण हैं।

मुख्य शब्द: कौटिल्य, मण्डल नीति, भू-राजनीति, दक्षिण एशिया, यथार्थवाद, सामरिक संतुलन।

प्रस्तावना

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन में प्रायः पश्चिमी विचारकों जैसे मैकियावेली, थॉमस हॉब्स और हंस मोर्गेंथाऊ को यथार्थवाद का जनक माना जाता है। परंतु ऐतिहासिक साक्ष्य और अकादमिक विश्लेषण यह प्रमाणित करते हैं कि पश्चिमी जगत में यथार्थवादी दर्शन के उदय से सदियों पूर्व, ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में, भारतीय विद्वान कौटिल्य (चाणक्य) ने 'अर्थशास्त्र' के रूप में राज्य संचालन, कूटनीति और युद्ध कला का एक अत्यंत परिष्कृत और व्यावहारिक खाका प्रस्तुत किया था।[1] 21वीं सदी के बदलते वैश्विक परिदृश्य में, जहां राष्ट्र-राज्य पुनः अपनी सीमाओं और संप्रभुता को लेकर आक्रामक हो रहे हैं, कौटिल्य के सिद्धांतों की अकादमिक और व्यावहारिक पुनरावृत्ति स्वाभाविक है। कौटिल्य का यथार्थवाद केवल शक्ति के अर्जन तक सीमित नहीं है, बल्कि वह राज्य के योगक्षेम (कल्याण और सुरक्षा) को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है।[2]

कौटिल्य की विदेश नीति का सबसे सशक्त और बहुचर्चित आयाम उनका 'मण्डल सिद्धांत' है, जिसका विस्तृत वर्णन

अर्थशास्त्र के छठे और सातवें अधिकरण में मिलता है।[3] मण्डल का शाब्दिक अर्थ है 'वृत्त' या 'घेरा'। यह सिद्धांत 12 प्रकार के राज्यों के एक वृत्त की परिकल्पना करता है, जिसके केंद्र में 'विजिगीषु' (विजय की आकांक्षा रखने वाला या महत्वाकांक्षी राजा) होता है। कौटिल्य का मानना था कि भू-राजनीति में भावना या नैतिकता का कोई स्थान नहीं होता; राज्य के संबंध शुद्ध रूप से राष्ट्रीय हितों और भौगोलिक अवस्थिति द्वारा निर्धारित होते हैं।[4]

मण्डल सिद्धांत का मूल मंत्र यह है कि दो पड़ोसी राज्य, जिनकी सीमाएं आपस में मिलती हैं, स्वाभाविक रूप से मित्र नहीं हो सकते। सीमा विवाद, संसाधनों पर नियंत्रण की होड़ और शक्ति विस्तार की आकांक्षा उन्हें स्वाभाविक शत्रु (अरि) बना देती है।[5] इसी तर्क को आगे बढ़ाते हुए कौटिल्य कहते हैं कि शत्रु की सीमा से लगा हुआ और विजिगीषु की सीमा से दूर का राज्य 'मित्र' होता है, क्योंकि दोनों का शत्रु एक ही है ("शत्रु का शत्रु मित्र होता है")।[6] इस व्यवस्था में अरि, मित्र, अरि-मित्र (शत्रु का मित्र), मित्र-मित्र (मित्र का मित्र), पाष्णिग्राह (पीठ पीछे का शत्रु), और आक्रंद (पीठ पीछे का मित्र) जैसे राज्यों का एक जटिल नेटवर्क बनता है।[7] इसके अतिरिक्त, कौटिल्य ने 'मध्यम' (बफर स्टेट जो विजिगीषु और अरि दोनों की सीमाओं से लगा हो) और 'उदासीन' (तटस्थ शक्तिशाली राज्य) की भी विशद व्याख्या की है।[8] आधुनिक भू-राजनीति, जो मैकिन्डर और स्पाइकमैन के सिद्धांतों पर आधारित है, भौगोलिक अवस्थिति को ही शक्ति का केंद्र मानती है। यह देखना अत्यंत रोचक है कि दक्षिण एशिया का वर्तमान कूटनीतिक परिदृश्य कौटिल्य के इसी भौगोलिक नियतिवाद के सांचे में लगभग पूरी तरह से फिट बैठता है।[9]

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र प्राचीन राजनीतिक दर्शन और समकालीन अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के मध्य एक अकादमिक सेतु का निर्माण करता है। इस अध्ययन के उद्देश्यों की स्पष्ट और तर्कसंगत पूर्ति हेतु एक विशिष्ट शोध प्रविधि और कार्यप्रणाली को अपनाया गया है। यह शोध पूर्णतः गुणात्मक, ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। चूँकि यह विषय कूटनीतिक दर्शन और भू-राजनीतिक व्यवहार पर आधारित है, इसलिए परिमाणात्मक आँकड़ों के बजाय वैचारिक और रणनीतिक विश्लेषण पर अधिक बल दिया गया है। इसके अतिरिक्त, शोध में आंशिक रूप से निगमनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है, जहाँ कौटिल्य के 'मण्डल सिद्धांत' (एक सार्वभौमिक/सामान्य नियम) को आधुनिक दक्षिण एशिया के विशिष्ट कूटनीतिक परिदृश्यों पर लागू करके परखा गया है।

आंकड़ा संग्रहण के लिए इस शोध में प्रत्यक्ष क्षेत्रीय कार्य के बजाय द्वितीयक स्रोतों का गहन उपयोग किया गया है। सामग्री संकलन के मुख्य आधारों में आर. पी. कांगले और एल. एन. रंगराजन द्वारा अनूदित व विश्लेषित कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' के मूल पाठ और उनकी अकादमिक व्याख्याएँ शामिल हैं। साथ ही, यथार्थवादी दर्शन, भारतीय सामरिक चिंतन और भारत की विदेश नीति पर कूटनीतिज्ञों और शिक्षाविदों (जैसे- एस. जयशंकर, शिवशंकर मेनन, और श्याम सरन) द्वारा लिखित प्रामाणिक पुस्तकों का संदर्भ लिया गया है। इसके अलावा 'जर्नल ऑफ़ स्ट्रैटेजिक स्टडीज़', 'साउथ एशियन जर्नल', और 'आईडीएसए' जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों के पीयर-रिव्यूड शोध पत्र और सामरिक रिपोर्ट्स का भी उपयोग किया गया है।

प्राप्त शोध सामग्री की व्याख्या के लिए तुलनात्मक और अंतःविषयक दृष्टिकोण अपनाया गया है। इसके अंतर्गत अर्थशास्त्र की प्राचीन शब्दावली (जैसे- विजिगीषु, अरि, मित्र, आक्रंद, षड्गुण्य) को आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की शब्दावली (जैसे- शक्ति संतुलन, छद्म युद्ध, रणनीतिक साझेदारी, बफर स्टेट) के समानांतर रखकर उनकी प्रासंगिकता का मूल्यांकन किया गया है। कौटिल्य के सिद्धांतों को केवल अमूर्त रूप में नहीं छोड़ा गया है, बल्कि इसका व्यावहारिक परीक्षण दक्षिण एशिया के वर्तमान सामरिक त्रिकोण (भारत-पाकिस्तान-चीन), चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे,

और भारत की 'एक्ट ईस्ट' नीति जैसे ज्वलंत दृष्टांतों पर किया गया है।

अध्ययन का क्षेत्र एवं सीमाएँ: अध्ययन का वैचारिक ढांचा यद्यपि सार्वभौमिक भू-राजनीति से जुड़ा है, किंतु इसका भौगोलिक और व्यावहारिक दायरा दक्षिण एशियाई कूटनीतिक तंत्र (मुख्यतः भारत के अपने पड़ोसियों तथा चीन के साथ संबंधों) तक सीमित रखा गया है। इस शोध की एक सैद्धांतिक सीमा यह है कि यह पूर्ण रूप से 'यथार्थवादी परिप्रेक्ष्य' पर केंद्रित है; अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के उदारवादी या रचनावादी सिद्धांतों-जैसे कि लोकतांत्रिक शांति सिद्धांत या अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों की भूमिका-का विश्लेषण इस अध्ययन के दायरे से बाहर रखा गया है।

दक्षिण एशियाई भू-राजनीति में मण्डल नीति का अनुप्रयोगः सामरिक त्रिकोण और पड़ोसी राज्य

दक्षिण एशिया के भू-राजनीतिक मानचित्र का सूक्ष्म विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि भारत अपनी विशाल अर्थव्यवस्था, जनसांख्यिकीय लाभांश, व्यापक सैन्य क्षमता और केंद्रीय भौगोलिक अवस्थिति के कारण स्वतः ही मण्डल के केंद्र यानी 'विजिगीषु' (विजय या सफलता की आकांक्षा रखने वाला राज्य) की भूमिका में स्थापित हो जाता है।[10] भारत की भू-सीमाएं क्षेत्र के लगभग सभी देशों (पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश और म्यांमार) से प्रत्यक्ष रूप से मिलती हैं, और समुद्री सीमाएं हिंद महासागर में श्रीलंका तथा मालदीव को स्पर्श करती हैं। 1947 में विभाजन के पश्चात से ही दक्षिण एशिया का इतिहास मुख्य रूप से शक्ति संतुलन और सुरक्षा दुविधा का जटिल इतिहास रहा है।[11] कौटिल्य का भौगोलिक नियतिवाद यहाँ पूरी तरह चरितार्थ होता है, जहाँ सीमाएं ही राज्य के सामरिक व्यवहार को दिशा देती हैं।

कौटिल्य के मण्डल सिद्धांत को यदि भारत-पाकिस्तान के ऐतिहासिक और वर्तमान संबंधों पर लागू किया जाए, तो पाकिस्तान स्पष्ट रूप से 'अरि' (स्वाभाविक शत्रु) की श्रेणी में आता है। दोनों देशों के बीच कश्मीर का विवाद, सर क्रीक लाइन, और महत्वपूर्ण जल बंटवारे के मुद्दे उसी भौगोलिक और सीमावर्ती घर्षण का प्रत्यक्ष परिणाम हैं जिसकी सटीक भविष्यवाणी कौटिल्य ने सदियों पूर्व की थी।[12]

चूंकि एक सीधा पड़ोसी स्वाभाविक रूप से वर्चस्व को चुनौती देता है, इसलिए पाकिस्तान ने भारत की श्रेष्ठ पारंपरिक सैन्य शक्ति को प्रतिसंतुलित करने के लिए 'असममित युद्ध' और 'छद्म युद्ध' का निरंतर सहारा लिया है। कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' में ऐसे युद्धों के लिए 'कूटयुद्ध' (छल-कपट से युद्ध) और 'तूष्णीं युद्ध' (गुप्तचरों के माध्यम से शत्रु को भीतर से कमजोर करने की नीति) का विस्तृत वर्णन मिलता है।[13] आज के संदर्भ में, आतंकवाद को राज्य की नीति के एक साधन के रूप में देखे जाने को कौटिल्य के इसी कूटयुद्ध का आधुनिक संस्करण माना जा सकता है।

इस दक्षिण एशियाई सामरिक मण्डल में सबसे निर्णायक, जटिल और बहुआयामी भूमिका चीन की है। यद्यपि चीन भौगोलिक रूप से एक विशाल पड़ोसी है, लेकिन सामरिक दृष्टि से वह 'अरि-मित्र' (शत्रु का मित्र) या एक 'उदासीन' किंतु हस्तक्षेपकारी महाशक्ति की भूमिका निभाता है।[14] कौटिल्य का सिद्धांत स्पष्ट रूप से यह प्रतिपादित करता है कि विजिगीषु को कमजोर करने के लिए अरि हमेशा एक मजबूत सहयोगी की तलाश करेगा।

इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में बढ़ती चीन-भारत प्रतिद्वंद्विता के बीच, चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा, पाकिस्तान को चीन द्वारा उन्नत परमाणु और सैन्य तकनीक का हस्तांतरण, तथा अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर एक-दूसरे का कूटनीतिक बचाव 'अरि' और 'अरि-मित्र' के बीच एक क्लासिक गठजोड़ का उत्कृष्ट आधुनिक रूप है।[15] इसके अतिरिक्त, चीन की 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' रणनीति-जिसके तहत वह म्यांमार (क्यौकप्यू), श्रीलंका (हंबनटोटा), और पाकिस्तान (ग्वादर) में रणनीतिक बंदरगाह विकसित कर रहा है, हिंद महासागर में भारत को चारों ओर से घेरने की एक आधुनिक 'मण्डलीय'

व्यूहरचना ही है।[16]

शत्रु के इस गठजोड़ के प्रत्युत्तर में, भारत (विजिगीषु) ने भी मण्डल नीति के अनुरूप अपने 'मित्र' और 'मित्र-मित्र' राज्यों को सक्रिय किया है। चूँकि पाकिस्तान भारत का शत्रु है, इसलिए कौटिल्य के सिद्धांत के अनुसार पाकिस्तान के उस पार स्थित राज्य भारत के स्वाभाविक मित्र होने चाहिए। इसी 'आक्रंद' (पीठ पीछे के मित्र) नीति के तहत भारत ने अफगानिस्तान के साथ प्रगाढ़ रणनीतिक संबंध बनाए, वहां संसद भवन का निर्माण किया और सलमा बांध जैसी विकास परियोजनाएं पूरी कीं, ताकि पाकिस्तान पर दो मोर्चों से कूटनीतिक दबाव बना रहे।[17]

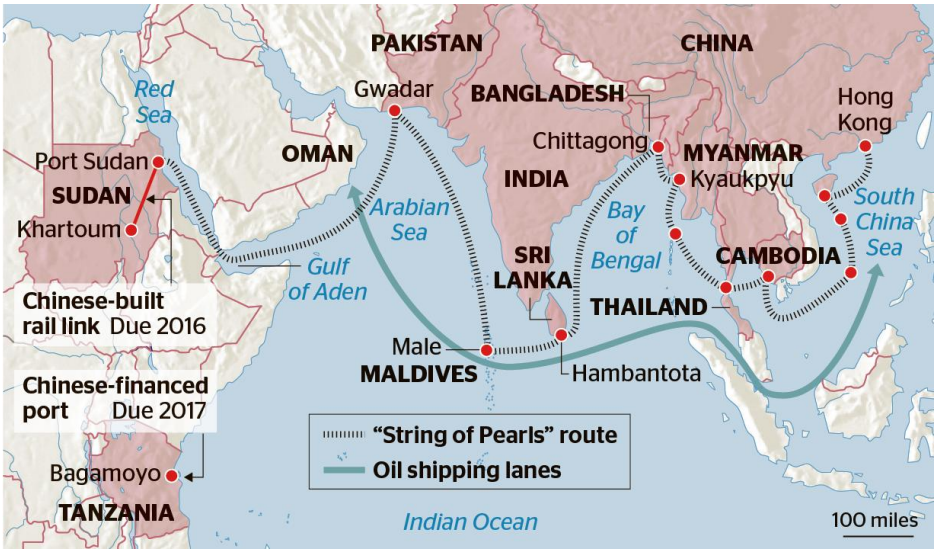

चित्र सौजन्य: https://www.globaljournalceners.org/article.php?e=55

इसी प्रकार, 'अरि-मित्र' (चीन) के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करने के लिए भारत की 'लुक ईस्ट' और बाद में 'एक्ट ईस्ट' नीति, तथा जापान, वियतनाम और संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ रणनीतिक साझेदारी (क्वाड-क्यू०यू०ए०डी०), मण्डल के बाहरी घेरे के शक्तिशाली मित्रों को अपने पक्ष में करने का एक परिष्कृत आधुनिक भू-राजनीतिक दांव है। जल संसाधनों और समुद्री क्षेत्रों को लेकर एशिया के नए युद्धक्षेत्र बनने के संदर्भ में भी ये गठबंधन अहम भूमिका निभाते हैं।[18]

यह विश्लेषणात्मक सत्य है कि मण्डल नीति केवल युद्ध और महाशक्तियों की शत्रुता तक सीमित नहीं है; इसमें कूटनीति के सूक्ष्म उपकरणों का भी समावेश है। कौटिल्य ने 'चतुर्दश उपाय' (साम, दान, भेद और दंड) तथा 'षड्गुण्य' (छह सूत्रीय विदेश नी-तिः संधि, विग्रह, आसन, यान, संश्रय और द्वैधीभाव) का विधान किया है। नेपाल, बांग्लादेश और श्रीलंका जैसे देशों के साथ भारत के संबंध और उसकी 'नेबरहुड फर्स्ट' नीति इन्हीं शास्त्रीय नीतियों के इर्द-गिर्द घूमती है।[19]

भारत इन 'मध्यम' (बफर) राज्यों के साथ 'साम' (कूटनीतिक वार्ता) और 'दान' (आर्थिक सहायता, क्रेडिट लाइन, कोविड काल में वैक्सीन मैत्री) का भरपूर उपयोग करता है, ताकि ये क्षेत्रीय देश शत्रु खेमे (चीन) के प्रभाव में न चले जाएं।[20] क्षेत्रीय गतिशीलता और सुरक्षा दुविधाओं के बीच, जब नेपाल में चीन का राजनीतिक प्रभाव बढ़ा या मालदीव में भारत विरोधी सरकारें आईं, तो भारत ने अपने रणनीतिक हितों की रक्षा के लिए 'आसन' (धैर्य या प्रतीक्षा) और आवश्यकता

पड़ने पर 'भेद' (कूटनीतिक दबाव) का भी यथार्थवादी उपयोग किया। आधुनिक विदेश नीति निर्माता भले ही सार्वजनिक मंचों पर कौटिल्य का नाम न लें, किंतु भारत की ग्रैंड स्ट्रेटेजी और सामरिक निर्णयों का मूल व्याकरण 'अर्थशास्त्र' की यथार्थवादी शिक्षाओं से ही उद्भूत होता है।[21]

आधुनिक चुनौतियां और कौटिल्य के सिद्धांत का आलोचनात्मक मूल्यांकन

ऐतिहासिक और वैचारिक दृष्टिकोण से कौटिल्य का सिद्धांत अत्यंत सटीक प्रतीत होता है, किंतु 21वीं सदी की भू-राजनीति में कुछ ऐसे नए तत्व जुड़ गए हैं जो मण्डल नीति के सीधे अनुप्रयोग को जटिल बनाते हैं। पहला बड़ा बदलाव है वैश्वीकरण और आर्थिक परस्पर निर्भरता। आज 'विजिगीषु' (भारत) और 'अरि-मित्र' (चीन) के बीच गहरे व्यापारिक संबंध हैं। चीन भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। कौटिल्य के युग में दो विरोधी राज्यों के बीच इस स्तर की आर्थिक निर्भरता की कल्पना नहीं की गई थी।[22] इसके बावजूद, गलवान घाटी की घटना और डोकलाम विवाद ने यह साबित कर दिया कि व्यापारिक संबंध अंततः भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता को समाप्त नहीं कर सकते, जो कौटिल्य के यथार्थवाद की ही पुष्टि करता है।

दूसरी बड़ी चुनौती परमाणु हथियारों की उपस्थिति है। अर्थशास्त्र के युग में युद्ध राज्य-विस्तार का एक वैध उपकरण था। कौटिल्य ने विजिगीषु को उपयुक्त समय पर 'यान' (सैन्य अभियान) की सलाह दी है।[23] परंतु परमाणु संपन्न दक्षिण एशिया में (भारत, पाकिस्तान और चीन तीनों परमाणु शक्तियां हैं), सीधा युद्ध आत्मघाती है। इसलिए कूटनीति 'विग्रह' (युद्ध) से हटकर 'द्वैधीभाव' (एक साथ शांति और संघर्ष की नीति) पर केंद्रित हो गई है।[24] आज सर्जिकल स्ट्राइक या बालाकोट एयरस्ट्राइक जैसी घटनाएं पूर्ण युद्ध नहीं हैं, बल्कि यह कौटिल्य के 'प्रताप' स्थापित करने का आधुनिक तरीका है।

अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं (यू०एन०, सार्क, बिमस्टेक) का उदय भी एक आधुनिक अवधारणा है, जहां राज्य केवल भौगोलिक मण्डल में ही नहीं, बल्कि बहुपक्षीय मण्डलों में भी व्यवहार करते हैं। सार्क का विफल होना और भारत द्वारा बिम्सटेक को बढ़ावा देना, कौटिल्य के उसी सिद्धांत का परिचायक है जिसमें राजा ऐसे गठबंधनों का निर्माण करता है जो उसके हितों की पूर्ति करते हों, और शत्रु (पाकिस्तान) को अलग-थलग (भेद नीति) कर सकें।[25]

निष्कर्ष

समग्र विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि 21वीं सदी की आधुनिक और तकनीक-संचालित दुनिया में भी राज्यों का मूल चरित्र नहीं बदला है। राष्ट्र आज भी शक्ति, सुरक्षा और उत्तरजीविता की आदिम प्रवृत्तियों से संचालित होते हैं। दक्षिण एशिया का भू-राजनीतिक परिदृश्य, जो कि अविश्वास, सीमा विवादों और महाशक्तियों की रणनीतिक चालबाजी से भरा है, कौटिल्य के मण्डल सिद्धांत के लिए एक सजीव प्रयोगशाला प्रस्तुत करता है। भारत की विदेश नीति का क्रमिक विकास-आदर्शवाद (गुटनिरपेक्षता) से हटकर बहु-संरेखण और रणनीतिक स्वायत्तता की ओर मुड़ना-कौटिल्य के यथार्थवाद की पूर्ण वापसी है। पाकिस्तान के साथ निरंतर सीमा संघर्ष, चीन के साथ सामरिक संतुलन बिठाने की कोशिश, और हिंद महासागर में अपना प्रभाव क्षेत्र बनाए रखने की जद्दोजहद साबित करती है कि भौगोलिक निकटता आज भी शत्रुता का सबसे बड़ा कारण है। हालांकि आधुनिक हथियार, साइबर युद्ध और आर्थिक प्रतिबंधों ने युद्ध के तरीके बदल दिए हैं, लेकिन राज्यशिल्प का मूल दर्शन आज भी वहीं खड़ा है जहां कौटिल्य ने उसे छोड़ा था। जब तक दक्षिण एशिया के राष्ट्र भौगोलिक सीमाओं से बंधे रहेंगे, तब तक मित्र और शत्रु की पहचान करने वाला कौटिल्य का मण्डल सिद्धांत न केवल प्रासंगिक रहेगा, बल्कि विदेश नीति विश्लेषकों और नीति-निर्माताओं के लिए एक अपरिहार्य

मार्गदर्शक भी बना रहेगा।

संदर्भ

1. कांगले, आर. पी. (1965). *द कौटिल्य अर्थशास्त्र: पार्ट III - अ स्टडी.* मोतीलाल बनारसीदास, पृ. 112-115.
2. बोएश, आर. (2002). *द फर्स्ट ग्रेट पॉलिटिकल रियलिस्ट: कौटिल्य एंड हिज़ अर्थशास्त्र.* लेक्सिंगटन बुक्स, पृ. 45-48.
3. रंगराजन, एल. एन. (1992). *कौटिल्य: द अर्थशास्त्र.* पेंगुइन बुक्स इंडिया, पृ. 501-504.
4. मॉडेलस्की, जी. (1964). "कौटिल्य: फॉरेन पॉलिसी एंड इंटरनेशनल सिस्टम इन द एंशिएंट हिंदू वर्ल्ड". *अमेरिकन पॉलिटिकल साइंस रिव्यू*, 58(3), पृ. 549-551.
5. ज़मान, आर. यू. (2006). "कौटिल्य: द इंडियन स्ट्रैटेजिक ट्रेडिशन एंड इंडियन स्ट्रैटेजिक थॉट". *जर्नल ऑफ़ स्ट्रैटेजिक स्टडीज़*, 29(2), पृ. 235-238.
6. गौतम, पी. के. (2013). "अंडरस्टैंडिंग कौटिल्याज़ अर्थशास्त्र". *आईडीएसए इश्यू ब्रीफ*, पृ. 12-14.
7. लीबिग, एम. (2014). *एंडोजेनस रूट्स ऑफ़ इंडियन स्टेटक्राफ्ट: कोपिंग विद द कौटिल्यन ट्रेट.* इंस्टीट्यूट फॉर डिफेंस स्टडीज़ एंड एनालाइज़ेस, पृ. 88-92.
8. सरन, एस. (2017). *हाउ इंडिया सीज़ द वर्ल्ड: कौटिल्य टू द 21स्ट सेंचुरी.* जगरनॉट बुक्स, पृ. 25-28.
9. जयशंकर, एस. (2020). *द इंडिया वे: स्ट्रैटेजीज़ फॉर एन अनसर्टेन वर्ल्ड.* हार्पर कॉलिन्स, पृ. 64-67.
10. पंत, एच. वी. (2016). *इंडियन फॉरेन पॉलिसी: एन ओवरव्यू.* मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 102-105.
11. मेनन, एस. (2016). *चॉइसेस: इनसाइड द मेकिंग ऑफ़ इंडियाज़ फॉरेन पॉलिसी.* ब्रुकिंग्स इंस्टीट्यूशन प्रेस, पृ. 40-44.
12. मुनि, एस. डी. (2003). "साउथ एशिया एज़ अ रीजन ऑफ़ सिक्योरिटी". *साउथ एशियन जर्नल*, 1(1), पृ. 55-58.
13. दीक्षित, जे. एन. (2004). *मेकर्स ऑफ़ इंडियाज़ फॉरेन पॉलिसी: राजा राम मोहन रॉय टू यशवंत सिन्हा.* हार्पर कॉलिन्स, पृ. 190-193.
14. मेलोन, डी. एम. (2011). *डज़ द एलीफेंट डांस? कंटेंपररी इंडियन फॉरेन पॉलिसी.* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 115-118.
15. मोहन, सी. आर. (2012). *समुद्र मंथन: साइनो-इंडियन राइवलरी इन द इंडो-पैसिफिक.* कार्नेगी एंडोमेंट फॉर इंटरनेशनल पीस, पृ. 210-213.
16. कपलान, आर. डी. (2010). *मानसून: द इंडियन ओशन एंड द फ्यूचर ऑफ़ अमेरिकन पॉवर.* रैंडम हाउस,

पृ. 132-135.

17. गांगुली, एस. (2001). *कॉन्फ्लिक्ट अनएंडिंग: इंडिया-पाकिस्तान टेंशंस सिंस 1947*. कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 85-88.
18. चेलानी, बी. (2011). *वॉटर: एशियाज़ न्यू बैटलग्राउंड*. जॉर्जटाउन यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 201-205.
19. डेस्ट्राडी, एस. (2012). *इंडियन फॉरेन एंड सिक्योरिटी पॉलिसी इन साउथ एशिया: रीजनल पॉवर स्ट्रैटेजीज़*. रूटलेज, पृ. 95-99.
20. हर्षे, आर. (2019). "इंडियाज़ नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी: डायनामिक्स एंड डिलेमाज़". *इंटरनेशनल स्टडीज़*, 56(2-3), पृ. 145-148.
21. बाजपेयी, के. (2014). "इंडियन ग्रैंड स्ट्रैटेजी: सिक्स डिबेट्स". *ऑक्सफोर्ड हैंडबुक ऑफ़ इंडियन फॉरेन पॉलिसी*, पृ. 120-123.
22. मुनि, एस. डी., और मिश्रा, सी. (2004). *इंडियाज़ बॉर्डर मैनेजमेंट: सेलेक्ट डॉक्यूमेंट्स*. नॉलेज वर्ल्ड, पृ. 60-64.
23. बिस्वास, ए. (2018). "री-एग्जामिनिंग कौटिल्य एंड मैकियावेली इन अ कम्पैरेटिव पर्सपेक्टिव". *स्ट्रैटेजिक एनालिसिस*, 42(5), पृ. 450-453.
24. टेलिस, ए. जे. (2001). *इंडियाज़ इमर्जिंग न्यूक्लियर पोस्चर: बिटवीन रिसेस्ड डिटरेंट एंड रेडी आर्सेनल*. रैंड कॉर्पोरेशन, पृ. 312-315.
25. पॉल, टी. वी. (2014). *द वॉरियर स्टेट: पाकिस्तान इन द कंटेंपररी वर्ल्ड*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 175-178.